IN THE MEDIA

Thursday, September 3rd , 2009

बेंगलूरु के भगवान महावीर कॉलेज में बुधवार को शुरू हिंदी पर दो दिवसीय संगोष्ठी में वक्ताओं को सुनते छात्र।

...भगत सिंह होते तो साहस करते

हिंदी के प्रति सौतेलेपन पर जोशी की बेबाक टिप्पणी

कहा, नहीं छोड़ी गुलामी की मानसिकता

कार्यालय संवाददाता

बेंगलूरु, 2 सितम्बर। 15 अगस्त, 1947 को यूनियन जैक के अवसान के साथ लाल किले पर तिरंगा तो लहराया, पर तब से लेकर आज तक देश को जोड़ने वाली हिंदी सौतेली बनी रही। अगर, उसी वक्त हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया जाता तो देश की तकदीर कुछ और होती। लेकिन तत्कालीन राजनीतिक नेतृत्व ने यह साहस नहीं दिखाया।

लेखक व वरिष्ठ पत्रकार हिमांशु जोशी ने कहा कि शहर के जेसी रोड स्थित भगवान महावीर जैन महाविद्यालय में बुधवार को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि हमने हिंदी को

उस समय हमारे देश का सर्वोच्च नेतृत्व ऐसे व्यक्ति के पास गया जो जमीन से नही जुड़े हुए थे। अगर उस वक्त देश को भगतसिंह जैसे लोक नेता का नेतृत्व मिलता तो वे निश्चित रूप से हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित करने का साहस करते।

उन्होंने कहा कि आज विश्व में 6 2 करोड़ से अधिक लोग हिंदी में बात करते हैं। संख्या की दृष्टि से यह विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। उन्होंने संस्कृत को मृतभाषा करार देने पर आपत्ति जताते हुए कहा कि अन्य भाषाओं के मापदंडों पर संस्कृत को तोलना ठीक नहीं है। उन्होने इजराइल की मिसाल देते हुए कहा कि 1948 में विश्व के कोने-कोने में रहने वाले यहूदियों ने एकत्रित होकर इजराइल

भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने की घोषणा की जो उस समय मृत कही जाती थी। इस कथित मृत हिब्रू भाषा ने विश्व के यहूदियों को एक सूत्र में पिरोया।

उन्होंने कहा कि हमने अभी तक गुलामी की मानसिकता को नहीं छोड़ा है। आज भी हम मानसिक संघर्ष से जूझ रहे हैं। हम यह नहीं कर पा रहे हैं कि हमें चलना किस मार्ग पर है। उन्होंने कहा कि इसके बावजूद वे कतई निराश नहीं है। भारत की युवा पीढ़ी की बुद्धिमानी विश्व में किसी से कम नहीं है। हमने सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व में पूरी दुनिया में डंका बजाया है।

गोष्ठी में गुरुवार को रांची विश्वविद्यालय के अवकाश प्राप्त प्रो. श्रवण कुमार गोस्वामी, डॉ. सूर्यबाला

Office of Corporate Affairs
Jain Group of Institutions